RNI NO. DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | MARCH 2016 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

भारत का संविधान एक धर्मनिरपेक्ष, सहिष्णु और उदार समाज की गारंटी देता है. संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है.यह स्वतंत्रता लोकतंत्र, सहिष्णुता में विश्वास रखने वालों का एक सार्वभौमिक और प्राकृतिक अधिकार है इसे कोई भी राज्य और धर्म छीन नहीं सकता.ष यह बात टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑ एडवांस्ड स्टडीज में 'ष्फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन रू अ प्रीरिक्विजिट टू डेमोक्रेसी'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सगोष्ठी के दौरान प्रोफ डॉ देवेश किशोर ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत कर विद्यार्थियों ,शिक्षको , और शोधकर्ताओं को संबोधित करते हुए कही द्य कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो (डॉ) देवेश किशोर (पूर्व डायरेक्टर , इएमपीसी, इग्नू) ,श्री राम कैलाश गुप्ता, (चेयरमैन टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूसंस), प्रो (डॉ वी) के कपूर (टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूसंस के महानिदेशक) , डॉ अजय कुमार (निदेशक ,टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज) , श्रीमती मंजरी जोशी ,(पूर्व न्यूज रीडर दूरदर्शन) , श्री एन के सिंह (जनरल सेक्रेटरी (बी ई ए) ,दिल्ली) ,प्रो एम एन झा टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के डीन (एकेडमिक्स)

व कन्वेनर डॉ राजेश अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित करके किया। श्री राम कैलाश गुप्ता, (चेयरमैन टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूसंस) ने कहा की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सही तरीके से लागू करने के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बेहद जरूरी है. यह सिर्फ नागरिकों के मूलभूत अधिकारों को ही नहीं, बल्कि देश की एकता और एकरूपता को भी बढावा देता है। टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूसंस के महानिदेशक प्रो (डॉ) वी के कपूरने कहा कि संविधान प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार और मानवाधिकार घोषणापत्र में स्वीकार किए गए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार में परिलक्षित एकरूपता है। यह एक ऐसा बुनियादी मानवाधिकार है जो अन्य सभी अधिकारों से महत्वपूर्ण है। डॉ अजय कुमार (निदेशक टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज) ने कहा की यह सही है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्र के बिना मनुष्य का विकास नही हो सकता ,और सही मायने में विकास रूपी पुल को हम इसके द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं । श्री एन के सिंह (जनरल सेक्रेटरी (बी ई ए) ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, वर्तमान शताब्दी की आवश्यकताओं में से है और

जिस समाज में अभिव्यक्ति और संचार माध्यमों की स्वतंत्रता न हो वह तानाशाही समाज होता है। यह बात स्पष्ट है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ, अपमान, उपहास और अराजकता नहीं है बल्कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ सदैव अपने तार्किक व यथार्थवाद व्यवहार से हटकर सामने आता है। प्रश्न यह है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संबंध में विश्व जनमत को किन साक्ष्यों पर भरोसा करना चाहिए ? क्या आज की दुनिया में प्रचलित अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, उन व्यवहारों से विरोधाभास नहीं रखती जो कुछ पश्चिमी देशों की ओर से थोपे जा रहे हैं?श्री रमेश शर्मा (डायरेक्टर दूरदर्शन ,जयपुर) ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मनुष्य का एक सार्वभौमिक और प्राकृतिक अधिकार है जिसे कोई भी राज्य या धर्म छीन नहीं सकता। प्रो हेमंत जोशी (आई आई एम सी ,दिल्ली) ने कहा कि भारत का संविधान एक धर्मनिरपेक्ष, सहिष्णु और उदार समाज की गारंटी देता है,। हर नागरिक का यह अधिकार है कि वो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सही तरीके से उपयोग कर समाज को सही दिशा की ओर ले जाये ।पहले ,दूसरे एवं तृतीय सत्र की अध्यक्षता क्रमसः सोनू त्रिवेदी सहायक प्रो (दिल्ली विश्वविद्यालय),डॉ दिलीप कुमार (सहायक प्रो टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज) एवं डॉक्टर चारू लता (विवेकानंद इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज) ने किया । संगोष्ठी में सर्वसम्मत से तय किया गया की भले ही संविधान ने सभी की अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार दिया है लेकिन इसका इस्तेमाल जब तक सही ढंग से नही होगा स्वतंत्रता की कल्पना करना बेमानी होगी । अतः सबको अभिव्यक्ति की आजादी के दायरे को समझते हुए लोकतंत्र को मजबूत करना होगा। कार्यक्रम के अंत में टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के डीन (एकेडमिक्स), प्रो एम एन झा ने धन्यवाद ज्ञापन किया । विभिन्न संस्थानों से आये हुए शिक्षक ,विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये द्य इस मौके पर सभी विभागों के शिक्षक और विदविद्यार्थी मौजूद रहे।

बाल कृष्ण मिश्र

Tecnia Institute of Advanced Studies organized its Management Fest - Endeavour On 18th March, 2016, with full zeal and zest in the college premises.Inaugural session started with lightening of Lamp and Saraswati Vandana followed by the opening remarks of Dr.Ajay Kumar Rathore, Director Tecnia Institute of Advanced Studies. He discussed about Endeavour and the relevance of this management fest and wished the success of Endeavour-2015 as well. She encouraged students to actively participate part in these kinds of events as it inculcates self-discipline and healthy competitive spirit among participants which would be beneficial to them in their future. Further, he gave an overview of various events.

(Prof.)Dr. V.K. Kapoor, Director General, TIAS, in his welcome address, discussed the importance of such events in all round grooming of students and also congratulated the organizers of the event and wished them luck for the same. Chief Guest Mr. F.B. Dwivedi encouraged the students for maximum participation. He threw light on the significance of such events in one's professional life and motivated the students to actively participate in various events.

Various events were successfully conducted and managed by the highly motivated team of the students under the inspiring mentorship of faculty members.

Students from various colleges participated with full zeal and enthusiasm. In synthesis ,Khyati MBA, TIAS won the 1st Prize whereas , Khushi,Rachit (BBA)TIAS both won the 2nd Prize, Yatin Khanna (MBA) secured the 3rd Position In Rangoli the 1st Position was secured by R. Disha (BBA), Radhika Prakash (BBA), Priyanka Arora (BBA),TIAS. The 2nd position was secured by Rishbhi(BJMC), Tamanna (BJMC), Shrishti Gulati (BJMC), TIAS and 3rd position was secured By Rinki, Riddhi, Tanvi (BBA In Admad show Bhawini, Dolly (BJMC)Won the 1st Prize whereas Tina, Shailav, Taranjeet, Himanshu (MBA won the 2nd Prize. The third position was grabbed by Priya, Damini and Preeti (MBA, DIAS In case presentation ,Mahima(BBA),Bhavini(BJMC) got first position and, Ayushi(MBA) TIAS secured the second position. The third position was grabbed by Anuj (BBA), Rashika (BBA) TIAS. In "just minute", Ayushman Singhal (BJMC) was adjudged the winner and Gaurav ,Ishan Banik (MBA) grabbed 2nd and 3rd position respectively.

In quiz ,Vandita,Shruti (Shyam Lal College, DU)were declared winners and second and third position was grabbed by Ashank,Mayank (GIBS) and Tina, Shailav (MBA),TIASrespectively. In product logo design the 1st position was grabbed by Shatakshi(MBA). The 2nd Position was secured by Himanshi Jain(MBA) and 3rd position by Ayushi Khandelwal (MBA). In debat competition out of all the participants, three teams stood out to secure the winning positions. 1st2nd 3rd position was secured by Srishti Sharma (DIAS),Ankush Patiyal (GIBS) & Japman Singh (GIBS) respectively.

All the winners were awarded with momentos and certificates by Sh. R.K. Gupta,Chairman,Tecnia Group of Institution (Prof.)Dr.V.K. Kapoor,Director General ,TIAS, Mr. M.N. Jha, Academic Controller, TIAS, Ms. Deepshikha, Convener, Endeavour 2016 and Faculty Members of TIAS.

The entire event was successful with the coordination and efforts of all the faculty members and students of Tecnia Institute of Advanced Studies.

-Bal Krishna Mishra
Deepshikha Sharma

शून्य' की भारतीय गणितीय परंपरा से दुनिया को रूबरू कराने की पहल

योग की भारतीय परंपरा को दुनिया में मान्यता दिलाने के बाद अब सरकार प्राचीन भारत में हुई गणित से जुड़ी शून्य की महत्वपूर्ण खोज के आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, कला, संगीत और दार्शनिक पहलुओं से दुनिया को रूबरू कराने की पहल कर रही है। मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी यूनेस्को मुख्यालय में शून्य पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भागीदारी कर रही हैं जिसका आयोजन यूनेस्को में भारत के स्थायी प्रतिनिधिमंडल और पेरिस स्थित पियरे एंड मेरी क्यूरी विश्वविद्यालय साथ मिलकर कर रहे हैं। इसमें यूनेस्को की महानिदेशक इरीना बोकोवा भी हिस्सा ले रही हैं। सम्मेलन के कई सत्रों में शून्य के विविध आयामों पर व्याख्यान भी होंगे।

जाने माने वैज्ञानिक प्रो. यशपाल ने कहा कि भारत के गणितज्ञों को संख्याओं की शुरूआत करने का श्रेय जाता है। सदियों पहले शून्य का आविष्कार भारत में ही हुआ, जिसके आधार पर गणित की सारी बड़ी गणनाएं होती हैं। प्राचीन भारतीय शास्त्रों और श्लोकों में गणित के तथ्य छिपे हुए हैं, जो कुछ न होकर भी सब कुछ कहते हैं। उन्होंने कहा कि गणित के क्षेत्र में इस महान खोज को आज दुनिया के समक्ष भारत के संदर्भ में रखना अच्छी पहल है। उन्होंने कहा कि प्राचीन ग्रंथों में ऐसी चर्चा रही कि आखिर शून्य किसे कहेंगे। अर्थात जो इतना छोटा हो जिसे हम माप नहीं सकेंगे, वही शून्य है। विज्ञान की भाषा में जो प्लैंक सीमा से छोटा हो उसे शून्य कहेंगे। कई वैज्ञानिक शोधों में कहा गया है कि यदि आप शून्य के भाव को देखें तो आप देखेंगे कि शून्य का

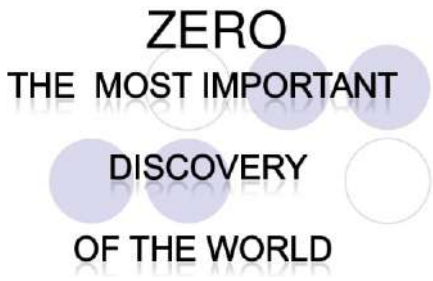

अपना एक महत्व है। बिग बैंग का सिद्धांत कहता है कि महाविस्फोट से पहले जब दिक, काल नहीं था तब ब्रह्मांड सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप में था। उसी सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप को प्राचीन ग्रंथों में गुहा कहा गया है और शून्य की उत्पत्ति भी इसी से जुड़ी बतायी गई है।

आईआईटी मुंबई के प्रो. के. सुब्रमण्यम ने कहा कि हम बातचीत के दौरान संख्याओं का प्रयोग करते हैं। अंकों का अध्यात्म से जुड़ाव है। 10 से 17 तक की संख्याओं को भारतीय दर्शन में मुक्ति मार्ग से जोड़ा गया है जिसमें शून्य काफी महत्वपूर्ण है। प्रो. सुब्रमण्यम के अनुसार, बौद्ध धर्म में शून्य का बड़ा महत्व है और इसे चिंतन तथा ध्यान से जोड़ा गया है। और जैन धर्म में अनंत संख्याओं को अध्यात्म से जोड़ा गया है। मैनचेस्टर विश्वविद्यालय में गणितज्ञ जॉर्ज जी जोसेफ ने अपने शोधपत्र में कहा है कि भारत द्वारा दी गई गणित की पद्धति अद्भुत है। मसलन यदि हम 222 लिखते हैं तो इसमें पहला 'दो' इकाई को दर्शाता है, जबकि दूसरे 'दो' का मतलब दहाई से और तीसरे 'दो' का मतलब सैकड़े से है। अर्थात भारतीय गणित पद्धति में किसी एक संख्या के स्थान से ही उसके स्थानिक मान का निर्धारण होता है। शोधपत्र में कहा गया है कि भारतीय गणित पद्धति से हम बड़ी से बड़ी संख्या को बहुत आसानी से और कम से कम संख्या के प्रयोग से व्यक्त कर सकते हैं जबकि ग्रीक या रोमन पद्धति इतनी विकसित नहीं है, बाकी दुनिया को जब शून्य का पता भी नहीं था तब भारत में 75वीं ईसवी में शून्य का चलन बहुत ही आम था। लगभग डेढ़ हजार साल पहले गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने शून्य के प्रयोग से जुड़ी एक किताब लिखी। जिसमें उन्होंने शून्य के प्रयोग के बारे में विस्तार से बताते हुए इसके आधारभूत सिद्धांतों की जानकारी भी दी। वेद प्रतिष्ठान के पंडित दुर्गेश पांडे ने कहा कि वेदांतों में जिसे ब्रह्म कहा गया है, वह शून्य ही ब्रह्म का प्रतीक है। अनंत का नाम ही शून्य है। गणित के अभ्यास आध्यात्म से जुड़ा विषय है।

यूनेस्को मुख्यालय में शून्य पर यह सम्मेलन 4 और 5 अप्रैल को हो रहा है। इस सम्मेलन का शुरूआती व्याख्यान प्रिंस्टन विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफेसर और फील्ड मेडल विजेता प्रोफेसर मंजुल भार्गव द्वारा जेम्स फार रामानुजन एंड देयर लास्टिंग इंपैक्ट ऑन मैथमेटिक्स है। इस दौरान प्रोफेसर मंजुल भार्गव द्वारा भारतीय संगीत में गणित पर विशेष सत्र सम्मेलन का मुख्य आकर्षण होगा। समारोह के दौरान यूनेस्को में कई सत्रों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें गणित और विज्ञान पर फिल्में और युवा श्रोताओं को ध्यान में रखकर विशेष सत्रों का आयोजन भी किया जाएगा।

—गौरव जोशी
बीजेएमसी, द्वितीय वर्ष

पौष्टिक आहार के साथ समझौता न करें स्त्रियां

महिलाओं के लिए शादी के बाद की उम्र ऐसी होती है जिसमें या तो वह नौकरीपेशा हो जाती हैं या घर के कामों में व्यस्त रहती हैं। इस समय कामकाजी महिलाओं को अपने आहार का खास ख्याल रखना होता है। एक तो उनके पास समय कम होता है और काम ज्यादा होते हैं इसलिए उनके लिए नाश्ता तो बहुत ही आवश्यक है। नाश्ता हलका और सुपाच्य होना चाहिए। साथ ही दोपहर का खाना ऐसा होना चाहिए जिसे खाकर सुस्ती न आए और कार्यक्षमता बनी रहे।

दोपहर के भोजन में सभी पोषक तत्व विद्यमान होने चाहिएं। यदि दोपहर के भोजन में सभी चीजें लेना संभव न हो तो यह कमी रात के भोजन में पूरी करें। जो महिलाएं नौकरीपेशा नहीं हैं उनके लिए भी भोजन, नाश्ता आदि सभी संतुलित होना चाहिए। अकसर देखने में आता है कि घरेलू महिलाएं सबका तो ध्यान रखती हैं लेकिन अपने ऊपर ज्यादा ध्यान नहीं देतीं। कभी—कभी गलत डाइट के कारण वह मोटी भी हो जाती हैं। मोटापा कई बीमारियों की जड़ होता है इसलिए भोजन में छह तरह के तत्वों का समावेश होना ही चाहिए। यह छह तत्व हैं— कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फैट,

विटामिन, मिनरल और पानी।

कार्बोहाइड्रेट चीनी, स्टार्च, ग्लूकोज आदि से मिलता है। इससे शक्ति मिलती है। एक ग्राम

कार्बोहाइड्रेट से चार कैलोरी मिलती है। दूध, दूध से बने पदार्थों और अंडे से प्रोटीन मिलता है। एक ग्राम प्रोटीन से भी चार कैलोरी प्राप्त होती है। विटामिनों की प्राप्ति के लिए गाजर, पालक, खट्टे फल, केले, सब्जी, मेवे आदि का सहारा लिया जा सकता है। खनिज पदार्थों में कैल्शियम दांतों के लिए बहुत जरूरी है इसी प्रकार लोहा खून बढ़ाने के लिए जरूरी है।

हर महिला के लिए डाइट अलग हो सकती है पर जरूरी है कि उसमें सभी चीजों का समावेश हो। एक दिन के भोजन में निम्न चीजों का समावेश होना चाहिए–

दूध व दूध से बने पदार्थ– 500 मिलीलीटर
दाल– तीस से पचास ग्राम
सब्जी– डेढ़ से दो सौ ग्राम
फल– तीन–चार
नॉनवेज– एक से दो पीस
अनाज– छह से आठ
वसा– प्रतिदिन तीन से पांच छोटे चम्मच तेल
चीनी– प्रतिदिन दो से तीन छोटे चम्मच

आइए अब आपके लिए खाने का मेन्यू प्लान करते हैं।

मेन्यू प्लान– चाय के साथ दो बिस्किट
ब्रेकफास्ट कामकाजी महिला– दूध–दलिया या कॉर्नफलेक्स, सैंडविच, एक कप अंकुरित दाल, एक फल।
ब्रेकफास्ट घरेलू महिला– चीला अथवा उपमा या फिर सैंडविच, दलिया, अंकुरित दालें और एक फल।
लंच– कामकाजी महिलाएं तो टिफिन ले ही जाती हैं। वे परांठा, सब्जी, पुलाव, दही आदि ले जा सकती हैं उन्हें साथ में एक फल जरूर लेना चाहिए। घरेलू महिलाएं दाल, सब्जी, रोटी, चावल, रायता, दही और सलाद के साथ ही मौसमी फल भी ले सकती हैं।
शाम की चाय– चाय के साथ बिस्किट या नमकीन ले सकती हैं।
डिनर– मिक्स्ड दाल, मौसमी सब्जी, रोटी, चावल, सलाद, दही और कोई स्वीट डिश तथा फ्रूट कस्टर्ड लिया जा सकता है।

–गौरी
बीजेएमसी, प्रथम वर्ष

बस्ते का बोझ कम करने की ओर ध्यान दे रही सरकार

स्कूली बस्ते का बोझ कम करने के लिए इस बार दिल्ली सरकार ने पहल की है उसका इरादा है कि स्कूलों में पढ़ाई का समय कम कर खेल–कूद और दूसरी गतिविधियों का समय बढ़ाया जाए। स्कूली बच्चों के पास हर विषय की अलग–अलग किताबें और कॉपियां होती हैं। कुल मिलाकर 20 से ज्यादा किताबें–कापियां उन्हें हर दिन स्कूल ले जानी पड़ती हैं। जिसका वजन कम से कम 10 से 12 किलो हो जाता है इससे बच्चों के कंधों और रीढ़ की हड्डी में दर्द होने लगता है। भारी वजन उनके शारीरिक विकास में भी रूकावट बनता है।

हाल ही में महाराष्ट्र सरकार ने एक अनोखी पहल की। तीसरी कक्षा में आठवीं कक्षा तक के बच्चों को बिना बस्ते के स्कूल बुलाया गया। और स्कूल ने इस दिन को श्वाचन प्रेरणा दिवसश का नाम दिया। इसी तर्ज पर केरल ने भी यह पहल की। हालांकि बच्चों के बस्ते का बढ़ता बोझ अब दिल्ली में भी कम होने लगा है। सरकारी स्कूलों के साथ–साथ कई प्राइवेट स्कूलों ने भी यह कदम उठाया है। गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान की बात करें, तो वहां अन्य के मुकाबले स्कूली बस्तों का बोझ कम ही है। तीसरी कक्षा में बच्चों के लिए भारी बैग मुसीबत बन जाता है। कई ऐसे भी पीरियड हैं, जो स्कूलों में खाली जाते हैं, कई बार कुछ पढ़ाई भी नहीं होती पर बैग में किताबें, कॉपियां तो सारी ले जानी पड़ती हैं।

सीबीएसई के अनुसार दूसरी कक्षा तक के बच्चों के बस्ते स्कूल में ही रहने चाहिए। बाकी बच्चों के लिए शिक्षकों और प्रिंसिपल को मिलकर ऐसा टाइमटेबल बनाना चाहिए, जिसमें बच्चों को ज्यादा किताबें न लानी पड़ें। चिकित्सकों की राय मानें, तो भारी बस्ता शारीरिक और मानसिक विकास का असर डालता है।

1980 में आरके नारायण ने राज्यसभा में बच्चों के बस्ते के बोझ को कम करने की आवाज उठाई थी। उन्होंने स्कूल बस्ते का बोझ कम करने के लिए एक कोशिश की थी। मगर आज 30 साल बाद भी बच्चे उसी बोझ से दबे हैं। स्कूल अभिभावकों को जिम्मेदार बताते हैं कि वे बच्चों के टाइम टेबल चेक नहीं करते।

अभिभावकों का कहना है कि स्कूल की इतनी किताबें और कापियां हैं कि बच्चे ले जाकर परेशान हो जाते हैं।

इस बार दिल्ली सरकार की सराहनीय पहल बच्चों के पक्ष में आई है। बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने के लिए अभियान चलाया गया है जिससे कई स्कूलों में नए टाइम–टेबल लागू होने से बच्चों को शायद भारी बस्ते से राहत मिले। कम होते बस्ते का बोझ उनकी सेहत के लिए अच्छा होगा क्योंकि बस्ते में किताबें और कापियों के साथ पेंसिल बॉक्स बौर दूसरे सामान के साथ–साथ लंच बॉक्स और पानी की बोतल से बैग और भी भारी हो जाता है। इसलिए किताबों का बोझ कम कर बच्चों पर दूसरी गतिविधियों का बोझ न बढ़ जाए, इसका भी ख्याल रखना होगा।

इस पहल का फायदा तभी है जब बच्चों को बच्चों की तरह पढ़ाया जाए श्रोबोटश की तरह नहीं। बस्ते रखने का प्रबंध स्कूल के सुनिश्चित करना चाहिए। कुछ स्कूलों ने ऐसे उपाय किए भी हैं। बच्चे उतनी ही किताबें घर ले जाएं, जितनी उन्हें जरूरत है। भारी बस्ते के बोझ से छुटकारे के लिए सटीक उपाय ढूंढ़ने होंगे। दृढ़ इच्छाशक्ति से ही नए विकल्प खुलेंगे और आने वाला भविष्य बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और स्वस्थ जीवन ला सकता है।

–शिखर श्रीवास्तव
बीजेएमसी, द्वितीय वर्ष

चंडीगढ़ के रॉक गार्डन में हैं अनोखी कलाकृतियाँ

यूँ तो कई कलाकार कचरे से कई प्रकार की कलाकृतियाँ बनाते हैं लेकिन क्या आपने कभी ऐसे गार्डन के बारे में सुना है जहाँ आपको हर जगह केवल कचरे और बेकार की वस्तुओं से बनी मूर्तियां और कलाकृतियां देखने को मिलें! जी हाँ आपने सही पहचाना हम बात कर रहे हैं चंडीगढ़ स्थित रॉक गार्डन की जिसे 1958 में नेक चाँद जी ने बनाया था।

बात चंडीगढ़ जाने की हो और रॉक गार्डन न घूमा जाए ये तो हो ही नहीं सकता। रॉक गार्डन चंडीगढ़ के सेक्टर एक में सुखना झील और कैपिटल काम्प्लेक्स के बीच में स्थित है, ये गार्डन चंडीगढ़ शहर का एक प्रमुख और चर्चित पर्यटक स्थल है जिसे नेकचंद रॉक गार्डन के नाम से भी जाना जाता है। हर साल देश विदेश से हजारो पर्यटक इस गार्डन को देखने आते हैं। रॉक गार्डन नेक चंद जी की रचनात्मकता और कल्पना का एक अद्भुत और उत्कृष्ट प्रतीक है। इस गार्डन में नेकचंद ने घरेलू, शहरी और औद्योगिक कचरे से कई मूर्तियां और कलाकृतियां बनाई हैं। नेकचंद एक कर्मचारी थे जो दिन भर साइकिल पर बेकार पड़ी ट्यूब लाइट्स, टूटी हुई चूड़िया, चीनी मिट्टी के बर्तन, तार, ऑटो पार्ट्स, चीनी के कप, फ्लश की सीट, बोतल के ढक्कन और बेकार फेकी हुई चीजों को बीनते रहते और यहाँ सेक्टर एक में जमा करते रहते और जब भी उन्हें अपनी नौकरी से कुछ समय मिलता वे इन चीजों से बेहतरीन और उत्कृष्ट मूर्तियाँ और अन्य कलाकृतियां बनाने बैठ जाते। इनके बनने के बाद लोग इन मूर्तियों को देख कर दंग रह गए।

इन मूर्तियों के अलावा इस गार्डन में भवन के कचरे, खाने के कांटे, खेलने की गोलियां और टेराकोटा बर्तन को मनुष्यों, पशुओं और काल्पनिक जीवों के आकार में दिखाया गया है। गार्डन में आपको झरने, पूल, घुमावदार रास्ते सहित 14 लुभावने चौम्बर भी देखने को मिलेंगे। साथ ही आपको यहाँ एक ओपन थिएटर देखने को मिलेगा जहाँ कई तरह की सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती रहती हैं।

यहाँ आने वाले पर्यटक इन मूर्तियों, मंदिरों, महलों आदि को देखकर अचरज में पडं जाते हैं कि कैसे बेकार के सामान से एक व्यक्ति इतनी शानदार कृतियों का निर्माण कर सकता है। रॉक गार्डन की कीर्ति अब देश विदेश के पर्यटकों और कलाप्रेमियों के दिलों तक पहुँच चुकी है।

आपको बता दें कि रॉक गार्डन साल के बारह महीनों और सातों दिनों खुला रहता है लेकिन अधिकतर पर्यटक यहाँ सर्दियों में ही जाना पसंद करते हैं क्योंकि गर्मी के दिनों में गार्डन की दीवारों से निकलने वाली उमस और मौसम की गर्मी उनका सारा मजा किर किरा कर देती है। गर्मियों में भी पर्यटक यहाँ आते हैं लेकिन उनकी संख्या सर्दियों के मुकाबले कम ही रहती है।

खुलने और बंद होने का समय

(अप्रैल से सितम्बर)– सुबह 9 बजे से 1 बजे तक और 3 बजे से शाम 7 बजे तक (अक्टूबर से मार्च)– सुबह 9 बजे से 2 बजे तक आए 2 बजे से शाम 6 बजे तक

–वयुना, बीजेएमसी, प्रथम वर्ष

Umang "Khwahisho Ki"

On 7th & 8th March 2016, at Sainik Vihar District park the student of Tecnia Institute of Advance Studies organized an awareness Camp along with the collaboration of the teacher and sponsors, Mittal brother and Kandal Vipra Samaj Shakha Sabha. The event convener Ms Nivedita Sharma told that Camp constituted of 150-200 kids from the slums, who were the main target of this campaign. The objective of this event was to promote awareness amongst the people who live in areas where proper sanitation and cleanliness lacks and to spark the light in students to take social initiatives for the betterment of the society. And also to give a platform for the student to organize such campaigns at their own. The event was conducted for 2 days, as there were a lot of students and had ample activities for them. On the first day of the Campaign, many students educated with number and mind games. It was a recreational activity which the kids enjoyed and participated with much of enthusiasm. The bright faces with the eagerness to learn more and more were in abundance. In all the activities the kids participated and learned too, the play on hygiene and cleanliness was comic in nature and asked students about suggestion for problems.

Stuti Sharma
BJMC, 2nd Year

The real joy of teaching !!!

Opening of Umang Khwahisho Ki

Guests and Faculty Members

The drama team performing to teach the basics of cleanliness habits to the kids

टेक्निया इंस्टिटच्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में 'द सेवियर्स' के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन

This Month

March 11, 1918 - The 'Spanish' influenza first reached America as 107 soldiers become sick at Fort Riley, Kansas. One quarter of the U.S. population eventually became ill from the deadly virus, resulting in 500,000 deaths. The death toll worldwide approached 22 million by the end of 1920.

*****

March 12, 1938 - Nazis invaded Austria, then absorbed the country into Hitler's Reich.

*****

March 1, 1932 - The 20-month-old son of aviation pioneer Charles A. Lindbergh was kidnapped from his home in Hopewell, New Jersey. The Lindberghs then paid a $50,000 ransom. However, on May 12, the boy's body was found in a wooded area a few miles from the house.

*****

March 24, 1934 - The Philippine Islands in the South Pacific were granted independence by President Franklin D. Roosevelt after nearly 50 years of American control.

*****

March 31, 1933 - The Civilian Conservation Corps, the CCC, was founded. Unemployed men and youths were organized into quasi-military formations and worked outdoors in national parks and forests.

*****

Compilation: Ms. Honey Shah

टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में 'द सेवियर्स' के सहयोग से 14 मार्च 2016 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें संस्था के समस्त छात्र– छात्राओं के अतिरिक्त अध्यापक गणों ने भी अपना सहयोग दिया। शिविर के इंचार्ज डॉ एन के भाटीया ने कहा कि रक्त दान महा दान होता इसलिए समय समय पर राजधानी के अलग अलग स्थानों पर लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से रक्त दान शिविर लगाया जाता है ताकि भविष्य में जरुरतमंदो को इसका लाभ मिल सके । डॉ भाटीया ने बताया कि रक्तदान शिविर से 77 यूनिट रक्त का संग्रह किया गया। टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीटूशन्सइस के चेयरमैन श्री राम कैलाश गुप्ता ने कहा इस तरह का आयोजन हम समय समय पर करते रहेंगे ताकि रक्त की कमी से होने वाले मौतों को रोका जा सके । टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीटूशन्स के महानिदेशक प्रो (डॉ) वी के कपूर ने कहा की हम सभी को रक्त दान करना चाहिए क्योंकि इसके द्वारा हम रक्त की कमी से जाने वाली जिंदगी को बचा पाएंगे। प्रो (डॉ) वी के कपूर ने यह भी बताया कि अट्ठारह से पैसठ वर्ष के लोग यदि अपने जीवन काल में कम से कम 25 बार रक्तदान करेंगे तो वे 500 लोगों के जीवन को बचा सकते हैं। टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के निदेशक डॉ अजय कुमार, डीन अकॅडेमिक्स प्रो एम एन झा ने इस आयोजन की प्रशन्सा करते हुए विद्यार्थीयों का उत्साहवर्धन किया। सामाजिक और नैतिक कर्तव्यों के निर्वहन के उद्देश्य से इस रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम के दौरान कार्यक्रम के दौरान सभी शिक्षकगण और विद्यार्थी मौजूद रहे।

—बाल कृष्ण मिश्र

Basics of Media

Switching : A change from one video source to another during a show or show segment with the aid of a switcher. Also called instantaneous editing.

*****

Analog Recording Systems : Record the continually fluctuating video and audio signals generated by the video and/or audio source.

*****

Composite System : A process in which the luminance (Y, or black-and-white) signal and the chrominance (C, or red, green, and blue) signal as well as sync information are encoded into a single video signal and transported via a single wire. Also called NTSC signal.

*****

Compression : Reducing the amount of data to be stored or transmitted by using coding schemes that pack all original data into less space (lossless compression) or by throwing away some of the least important data (lossy compression).

*****

Control Track : The area of the videotape used for recording the synchronization information (sync pulse). Provides reference for the running speed of the VTR, for the placing and reading of the video tracks, and for counting the number of frames.

*****

Compilation: Rahul Mittal

टेक्निया इंस्टिटच्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में आत्म रक्षा पर छात्राओं के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

अर्थ है अपने आप को पीड़ित की छवि से आजाद करना है । जब हम आत्म–रक्षा की बात करते हैं तो सिर्फ शारीरिक हिंसा या चोट के बारे में नहीं सोचते। हम आत्म–रक्षा की बात करते हैं हर मौके पर, फिर चाहे वह जलील मजाक व छींटाकशी रोकने की हो, या फिर अचानक बात करते समय बीच में चुप कराए जाने के विरोध की हो। चाहे आदमियों की घूरती नजरों को चुनौती देने का प्रश्न हो या मारपीट का सवाल। आत्म रक्षा के मायने सिर्फ बलात्कार या मारपीट रोकने का मकसद नहीं होता। इसका मतलब है रोजमर्रा के जीवन में ''हानिकारक'' घटनाओं का सामना करना।

टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीटूशन्सइस के चेयरमैन श्री राम कैलाश गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है की हम बालिकाओं को आत्मरक्षा संबंधी प्रशिक्षण एवं परामर्श, विषम परिस्थितियों में बचाव के उपाय एंव आत्मरक्षा के साधनों की जानकारी दें ताकि वे अपनी रक्षा कर पाएं । ऐसा जब होगा तभी हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएंगे।टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीटूशन्स के महानिदेशक प्रो (डॉ) वी के कपूर ने कहा कि आत्मा रक्षा की रणनीति हमें सिखाती है अपनी खुद की कीमत, अपने खुद के लिए प्यार और सम्मान, अपने शरीर पर हक और समाज की प्रतिबद्धता। एक सचेत महिला अगर अपनी हिम्मत, अपने मजबूत इरादे, जानकारी , कौशल और अपने जीवट का सक और दूसरा का भी सुरक्षा प्रदान कर सकें।टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के निदेशक डॉ अजय कुमार ने बताया की छात्राओं को आत्मरक्षा के प्रति सजग बनाने के लिए इस तरह के कार्यशाला समय–समय पर संस्थान में आयोजित किए जाते रहेंगे।, डीन अकॅडेमिक्स प्रो एम एन झा ने इस कार्यशाला की प्रशन्सा करते हुए छात्राओं का उत्साहवर्धन किया। इस दौरान कार्यशाला की संयोजिका डॉ नमिता मिश्रा , शिक्षकगण और छात्राएं मौजूद रहे।

—बाल कृष्ण मिश्र

Vol. 12 **No.**3
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"When you do the common things in life in an uncommon way, you will command the attention of the world."

George Washington Carver

*****

"How wrong it is for a woman to expect the man to build the world she wants, rather than to create it herself."

Anais Nin

*****

"Maybe this world is another planet's Hell."

Aldous Huxley

*****

"Blessed is the man, who having nothing to say, abstains from giving wordy evidence of the fact."

George Eliot

*****

"Once you eliminate the impossible, whatever remains, no matter how improbable, must be the truth."

Sherlock Holmes

*****

"Black holes are where God divided by zero."

Steven Wright

*****

Compilation: Ms. Bhavna Madan Vij

Winners V/s Loosers

Part-56

Winners are a part of the team; Losers are apart from the team.

*****

Winners see the gain; Losers see the pain.

*****

Winners see possibilities; Losers see problems.

*****

Winners believe in win-win; Losers believe for them to win someone has to lose.

*****

Winners see the potential; Losers see the past.

*****

Winners are like a thermostat; Losers are like thermometers.

*****

to be continued in next issue

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at youngster@tecnia.in